ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो रास्व सुवीर्यम्।। अथर्व0 20/108/3

हे शक्तिदाता प्रभो! आप हमें वीरता प्रदान करें।
O ! the Bostower of power Lord ! Bestow valour on us.

वर्ष 38, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 दिसम्बर, 2014 से रविवार 21 दिसम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
23 दिसम्बर पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आन्दोलन

– डॉ. विवेक आर्य

आधुनिक भारत में 'शुद्धि' के सर्वप्रथम प्रचारक स्वामी दयानन्द थे तो उसे आन्दोलन के रूप में स्थापित कर सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द थे। सबसे पहली शुद्धि स्वामी दयानन्द ने अपने देहरादून प्रवास के समय एक मुस्लमान युवक की थी जिसका नाम अलखधारी रखा गया था। स्वामी जी के निधन के पश्चात् पंजाब में विशेष रूप से मेघ, ओड और रहतिये जैसे निम्न और पिछड़ी समझी जाने वाली जातियों का शुद्धिकरण किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य उनकी पतित, तुच्छ और निकृष्ट अवस्था में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार करना था। आर्यसमाज द्वारा चलाये गए शुद्धि आन्दोलन का व्यापक स्तर पर विरोध हुआ क्योंकि हिन्दू जाति सदियों से कूप मण्डूक मानसिकता के चलते सोते रहना अधिक पसंद करती थी। आगरा और मथुरा के समीप मलकाने राजपूतों का निवास था जिनके पूर्वजों ने एक आध शताब्दी पहले ही इस्लाम की दीक्षा ली थी। मलकानों के रीति रिवाज अधिकतर हिन्दू थे और चौहान, राठौर आदि गोत्र के नाम से जाने जाते थे। 1922 में क्षत्रिय सभा मलकानों को राजपूत बनाने का आह्वान कर सो गई मगर मुसलमानों में इससे पर्याप्त चेतना हुई एवं उनके प्रचारक गांव-गांव घूमने लगे। यह निष्क्रियता स्वामी श्रद्धानन्द की आँखों से छिपी नहीं रही। 11 फरवरी 1923 को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना करते समय स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुद्धि आन्दोलन आरम्भ किया गया। स्वामी जी द्वारा इस अवसर पर कहा गया कि जिस धार्मिक अधिकार से मुसलमानों को तब्लीग और तंजीम का हक है उसी अधिकार से उन्हें अपने बिछुड़े भाइयों को वापिस अपने घरों में लौटाने का हक है। आर्यसमाज ने 1923 के अन्त तक 30 हजार मलकानों को शुद्ध कर दिया।

वर्तमान समय में शुद्धि आन्दोलन एवं घर वापसी पर बड़ी बहस चल रही है। वास्तव में इस बहस को बड़ा रूप दिया जाना चाहिए,ताकि इसकी आवश्यकता एवं इसके इतिहास पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सके। वह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा का ही परिणाम है कि शुद्धि के विषय में ये हिन्दू समाज सोच भी सका, नहीं तो हमने अपने भाइयों को विधर्मी बनाने में कोई कसर शेष नहीं रखी थी। अगर विधर्मियों के 'धर्मान्तरण' के इस बढ़ते हुए रथ को, शुद्धि आन्दोलन को ढाल बनाकर रोका न जाता तो इस देश का सामाजिक ढांचा किसी और रूप का होता। यह एक ऐतिहासिक सत्य है,कोई इसे माने या न माने,परन्तु इस सत्य को शामिल किये बिना भारत के वर्तमान इतिहास को पूरा नहीं कहा जा सकेगा। ये बात अलग है कि- जिस गति से इस आन्दोलन को स्वामी श्रद्धानन्द और पंडित लेखराम जी द्वारा शुरू किया गया, हम अपनी कमजोरियों के कारण उस` उस गति में बरकरार नहीं रख सके, जबकि वर्तमान समय में इस आन्दोलन की उस समय से भी अधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है। पंडित कुंवर सुखलाल 'आर्य मुसाफिर' की ये पंक्तियाँ - "आर्यों गले से लगा लो इन्हें, वरना ये लाल गैरों के हो जाएँगे।" उस समय के आधार पर भी सच्ची थी और आज भी प्रासंगिक हैं। - सम्पादक

– शेष पृष्ठ 4 पर

स्वामीजी ने दलितोद्धार व भारतीय हिन्दू शुद्धि-सभा स्थापित कर समाज के पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाने में भरपूर सहायता दी। उन्होंने शुद्धी-करण का भी कार्य आरम्भ कर दिया, इससे जो हिन्दू जबरन मुसलमान बना लिये गये थे वे पुनः हिन्दू धर्म में लौटने लगे।

वर्तमान युग में शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

88वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

बुधवार 25 दिसम्बर, 2014

यज्ञ: प्रात: 8 से 9:30 बजे शोभायात्रा प्रारम्भ : प्रात: 10 बजे

स्थान: स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

अवश्य देखें
आस्था चैनल पर
27 दिसम्बर, 2014
प्रात: 10 से 1 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

स्थान: रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2 समय : दोपहर 1:00 से 4:00 बजे

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

निवेदक : आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

पितृ ऋण से अनृण होना

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्।
एतत्तदग्नेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त।।
यजुर्वेद : अध्याय १९ मन्त्र १०

अर्थ—हे **(अग्ने)** विद्वन् **(यत्)** जो मैंने **(प्रमुदितः)** अत्यन्त आनन्दित हो **(पुत्रः)** बाल्यावस्था में **(धयन्)** दूध पीते हुये **(मातरमापिपेष)** अपनी माता को पीड़ित किया है, उस ऋण से मैं **(अनृणो भवामि)** ऋण रहित होता हूँ। **(अहतौ पितरौ मया)** मेरे द्वारा माता-पिता को किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे। हे पितर जनो! **(सम्पृचः स्थः)** आप लोग सत्य धर्मादि शुभ गुणों से युक्त होओ और (मा भद्रेण सं पृक्त) मुझे भी सद्गुणों और कल्याणकारी व्यवहार की शिक्षा दो। **(पाप्मना)** पाप से **(विपृचः स्थः)** स्वयं दूर रहकर **(मा पाप्मना विपृक्त)** मुझे पाप से पृथक् कीजिए। **(तदेतत्)** आप लोक-परलोक दोनों में सुख को प्राप्त कीजिए।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है इसलिये उत्पन्न होते ही वह समाज के ऋणों से ऋणी होता जाता है। सबसे बड़ा ऋण माता का है जो उसे नौ मास तक गर्भ में धारण करती है। जब बच्चे का जन्म होता है तब माता को कितना कष्ट होता है यह कोई माँ ही जान सकती है। बाँझ स्त्री या पुरुष को इसका ज्ञान नहीं होता। उस समय स्त्री का दूसरा जन्म समझना चाहिये।

जन्म के पश्चात् बच्चे का पालन-पोषण, संरक्षण और सम्भाषण गुरु बन कर माता ही करती है अतः प्रथम गुरु माता ही है। बालक का अन्तःकरण कोरे कागज की भाँति होता है जिस पर माता जो लिख देती है उसकी अमिट छाप जीवन भर बनी रहती है। इसीलिये **माता गुरुतरा भूमेः** (महा०वन०अ० १३३) माता का गौरव पृथिवी से अधिक कहा है। माता का सन्तान पर जो ऋण है सचमुच उससे अनृण होना सम्भव नहीं है।

माता के समान पिता को भी आकाश से ऊँचा माना गया है। शास्त्रकार कहते हैं कि पिता ही माता के गर्भ से पुत्र रूप में जन्म लेता है अतः **आत्मा वै पुत्र नामासि** वह मानो पिता की आत्मा ही है तथा बच्चे का पालन-पोषण, रक्षण और वर्धन करने से उसका पितर नाम प्रसिद्ध हुआ है। ये दोनों पूज्य हैं जिन्हें लक्ष्य कर पुत्र कह रहा है—

१. यदा पिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्—बाल्यकाल में मैंने प्रसन्नता मनाते हुये दुग्ध पीने की इच्छा से माता के स्तनों को पीड़ित किया है। कभी-कभी अपने दाँतों से उन्हें काट खाया और कभी अधिक दूध पीने के लिये उन्हें जोर से दबाया भी है जब कभी स्तनों में दूध नहीं होता था तब भी मैं उनका पान करने का हठ करता था और करुणा की मूर्ति वह देवी असहाय अवस्था में भी दयार्द्र होकर मुझे अपने पयोधर का पान कराती। मेरी सदैव सुरक्षा का ध्यान कार्य में व्यस्त रहते हुये भी रखती रहती। जब कभी रात्रि में मैंने शय्या को गीला किया तो वह स्वयं गीले में सोती और मुझे सूखे में सुलाती। जब कभी मैं रुग्ण हुआ तो वह सारी रात भर जागती रहती। उसके उपकार मेरे ऊपर इतने हैं कि कई जन्म लेकर भी उनका बदला नहीं चुकाया जा सकता। ओह! माँ!! तुम कितनी महान् हो! मनीषी कहते हैं—

न च शोचति नाप्येनं स्थाविर्यम पकर्षति। श्रियाहीनोऽपि यो गेहमम्बेति प्रतिपद्यते॥ २७॥

माता के रहते मनुष्य को कभी चिन्ता नहीं होती। बुढ़ापा उसे अपनी ओर नहीं खींचता है माता भोजन खान-पान और स्वास्थ्य का ध्यान रखती है जिससे शीघ्र बुढ़ापा नहीं आता। जब तक घर में माता जीवित है तब तक उसे पुकारता हुआ वह बालक के समान निस्संकोच प्रविष्ट हो जाता है। माता के स्वर्गगामी हो जाने पर ही व्यक्ति अपने आप को अकेला, असहाय और बूढ़ा समझने लगता है। उसे सारा संसार सूना प्रतीत होने लगता है।

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः। नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमा प्रिया॥

महा०शा०अ० २६६.३१

सचमुच माता के समान दूसरी छाया नहीं है अर्थात् माता की छत्र-छाया में जो सुख है वह कहीं नहीं है। माता के तुल्य कोई दूसरा सहारा नहीं है। माता के सदृश अन्य कोई रक्षक नहीं है तथा बच्चे के लिये माता के समान दूसरी कोई प्रिय वस्तु नहीं है। उसकी सारी दुनिया माता के आँचल में ही सिमटी रहती है।

जहाँ माता के इतने उपकार हैं वहाँ पिता का ऋण भी कुछ कम नहीं है—

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता ही परमं तपः। पितरि प्रीतिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः॥ महा०शा०अ० २६६.२१

पिता ही धर्म अर्थात् कर्त्तव्य का बोध कराने से पूज्य है। पिता ही स्वर्ग=सुख-विशेष को देने वाला है। पिता की सेवा करना सबसे बड़ा तप है। पिता के प्रसन्न होने पर सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं—

आशिषस्ता भजन्त्येनं परुषं प्राह यत् पिता। निष्कृतिः सर्वपापानां पिता यच्चाभिनन्दति॥

महा०शा०अ० २६६.२२

पिता पुत्र से यदि कुछ कठोर बातें कह देता है तो वे आशीर्वाद बनकर उसे फलित होती हैं। पिता यदि पुत्र का अभिनन्दन, मधुर वचन और प्रशंसा करता है तो इससे पुत्र के पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

२. एतत् तदग्नेऽनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया—हे विद्वज्जन! माता-पिता के किये उपकारों का स्मरण करते हुए मैं उन सभी उपायों को कर रहा हूँ जिनसे मेरे माता-पिता को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचे। मैं प्रातः काल उठकर उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ग्रहण करता हूँ। स्नान, सन्ध्या, जप के पश्चात् उनके अनुकूल प्रातराश, भोजन, वस्त्रादि का ध्यान रखता हूँ। सायंकाल भी कुछ समय तक उनके समीप बैठकर सन्मार्ग ग्रहण करता हूँ। उनके आशीर्वाद और उत्साह सम्वर्धन से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

३. संपृचः स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त—हे पितरो! आपसे यही विनम्र निवेदन है कि जैसे आपका जीवन शुभ आचरण, सत्य-धर्मनिष्ठ और परोपकारक रहा है—वैसा ही जीवन जीने के लिये मुझे सदैव सन्मार्गदर्शन कराते रहिये। यद्यपि बाल्यकाल एवं युवावस्था में आप लोगों ने मुझे पग-पग पर बुराइयों से बचाकर

- शेष पृष्ठ 6 पर

महान् धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-दूत और क्रान्तिकारी थे स्वामी श्रद्धानन्द

- प्रो. भवानीलाल भारतीय

स्वयं को कल्याण मार्ग पर चलने वाला एक पथिक मानने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने जब उसी नाम से अपनी आत्मकथा लिखकर ज्ञानमण्डल काशी से 1924 में प्रकाशित कराई तो साहित्य समीक्षकों की धारणा थी कि हिन्दी में आत्मकथा लेखन का इससे अधिक उत्कृष्ट ग्रन्थ कोई अन्य नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द यद्यपि जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में जन्मे थे तथा उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, किन्तु वे हिन्दी के सुलेखक, पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा के हिमायती नेता भी थे। हिन्दी साहित्य के भागलपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर अपना अभिभाषण देते हुए उन्होंने हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप और उसकी राष्ट्र व्यापी मान्यता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया था। वे सफल पत्रकार भी थे। पहले उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक 1889 में उर्दू में निकाला किन्तु यह अनुभव करने पर कि हिन्दी माध्यम का पत्र उनके विचारों को अधिक जनता तक पहुँचा सकता है, उन्होंने 1907 में इसे हिन्दी में कर दिया। उन्होंने एक अन्य पत्र साप्ताहिक 'सत्यवादी' 1904 में निकाला तथा 'श्रद्धा' नामक मासिक का प्रकाशन 1920 में किया। अपने राजनीतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने अंग्रेजी में 'दि लिबरेटर' नामक पत्र का आरम्भ किया था। यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

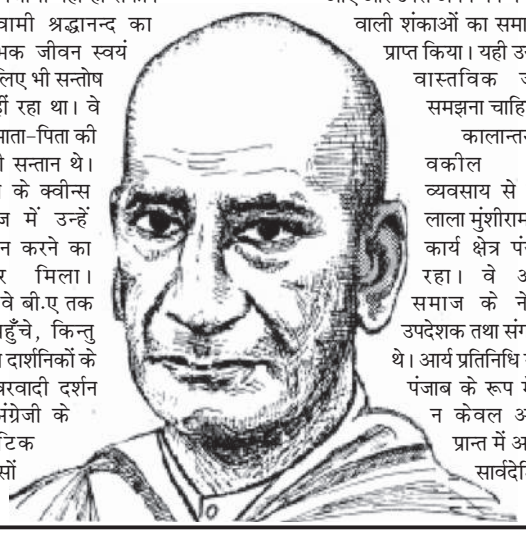

स्वामी श्रद्धानन्द का आरम्भिक जीवन स्वयं उनके लिए भी सन्तोष प्रद नहीं रहा था। वे अपने माता-पिता की लाडली सन्तान थे। बनारस के क्वीन्स कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। यद्यपि वे बी.ए तक नहीं पहुँचे, किन्तु पूरोपीय दार्शनिकों के अनीश्वरवादी दर्शन तथा अंग्रेजी के रोमांटिक उपन्यासों के अध्ययन ने उनके मस्तिक में एक विचित्र तूफान पैदा कर दिया था। उनके जीवन में उस समय प्रशान्ति तथा पूर्ण विवेक का आविर्भाव हुआ जब वे 1879 में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनसे अपने मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। यही उनका वास्तविक जन्म समझना चाहिए।

कालान्तर में वकील के व्यवसाय से जुड़े लाला मुंशीराम का कार्य क्षेत्र पंजाब रहा। वे आर्य समाज के नेता, उपदेशक तथा संगठक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में वे न केवल अपने प्रान्त में अपितु सार्वदेशिक स्तर पर सर्वमान्य नेता की भूमिका में आए। स्वयं के स्वाध्याय के बल पर उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ समर में पटखनी दी और वैदिक धर्म के गौरव की स्थापना की। प्रारम्भ में वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग देते रहे, किन्तु जब उन्हें यह आभास हुआ कि इस महाविद्यालय में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को पूरा नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करते हुए 1902 में गंगा के तटवर्ती बिजनौर जिले के कांगड़ी ग्राम के अंचल में गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की और मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से प्राचीन वैदिक शास्त्रों के साथ-साथ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की। देश की स्वाधीनता के लिए किए गए प्रयत्नों में भी स्वामीजी का योगदान कम नहीं था। राष्ट्रीय कांग्रेस के

- शेष पृष्ठ 5 पर

समसामयिक घटना
धर्म परिवर्तन

सारा झगड़ा सम्प्रदायों का है, धर्म का नहीं

– प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

क त्तर प्रदेश की घटना को लेकर विशेषकर संसद में टी. वी. चैनल्स पर पूरे देश में जंग छिड़ी हुई है। कारण है कुछ मुस्लिम मजहब के मानने वालों का हिन्दू हो जाना। विवाद में एक-दूसरे पर आक्षेप लगाए जा रहे हैं। यह पहली बार नहीं हो रहा, लालच, भय, सेवा, शिक्षा, क्रूरता के द्वारा एक सम्प्रदाय के लोगों को उसके सम्प्रदाय से हटाकर दूसरे सम्प्रदाय में दीक्षित करना, अपनी संख्या की वृद्धि करने का प्रयास कोई नया नहीं है, किन्तु यह सनातन भी नहीं है। यह महाभारत काल के पश्चात् धर्म के नाम पर मजहबों, सम्प्रदायों का जन्म होता गया, तभी से यह सुनने व देखने को मिला।

पारसी, जैन, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख इन सबकी स्थापना का आधार कोई महापुरुष रहा है। इसलिए इन सभी तथाकथित धर्मों का आधार कोई महापुरुष ही है उनके पहले यह मान्यता (मजहब) अस्तित्व में नहीं थी। यह भी सत्य है कि इनका अस्तित्व महाभारत काल अर्थात् 5000 से साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व तक नहीं था।

इनकी स्थापना के पूर्व अर्थात् महाभारत काल के पूर्व विश्व इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं है, जिसमें धर्म के नाम पर एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में मिलाने का (धर्मान्तरण करने का) कोई प्रयास किसी के द्वारा किया गया हो।

हाँ, सज्जन, दुर्जन, दैत्य, देवता, पापी, पुण्यात्मा, में भेद अवश्य था परन्तु यह पहचान व्यक्ति के गुण कर्म स्वभाव के अनुसार थी, इसका आधार जाति, देश, सम्प्रदाय नहीं हुआ करता था। जो श्रेष्ठ गुणों को धारण करते थे जिनके आचार-विचार व्यवहार धर्मानुकूल होते थे, उन्हें श्रेष्ठ (आर्य) और जो पतित होते उन्हें दस्यु, राक्षस (अनार्य) के नाम से संबोधित किया जाता था।

इसलिए ईश्वर, धर्म, जाति, मजहब के नाम पर विवाद नहीं होते थे। सारे संसार के व्यक्ति केवल एक धर्म को मानने वाले होते थे। यह धर्म सृष्टि के प्रारंभ में मानव उत्पत्ति के साथ ही प्राप्त हुआ था। इस वर्तमान सृष्टि को उत्पन्न हुए 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख व 53 हजार वर्ष हो चुके। यह संख्या मात्र किसी भावनात्मक या अनुमान से नहीं की गई।

यहां यह विचारणीय बात है कि इन सम्प्रदायों के स्थापित होने के पूर्व इस प्रकार की घटनाएं क्यों नहीं होती थी? क्या 5000 वर्ष के पूर्व के व्यक्ति धर्म को नहीं मानते थे?

इसका एक ही उत्तर हो सकता है यह कि पहले धर्म ही था, सम्प्रदाय नहीं थे, इसलिए धर्मान्तरण, साम्प्रदायिक हिंसा, जाति, मजहब के नाम पर अलगाव नहीं था। आज भी धर्म की वास्तविकता को समझ जाएं तो सारे विवादों का अन्त हो जाये।

इसलिए पहले धर्म और सम्प्रदाय के अन्तर को समझना होगा, सम्प्रदायों में धर्म के कुछ अंश और किसी महापुरुष के विचारों का कुछ भाग दोनों का सम्मिश्रण पाया जाता है। धर्म का स्वरूप कर्त्तव्य परायणता, नैतिकता, सत्याचरण, परोपकार सबकी उन्नति में है। धर्म सब मानवों के लिए है मानवीय समाज में कुछ तबके के लिए नहीं है। किन्तु सम्प्रदाय कुछ विशेष समुदाय तक सीमित रह गया। यदि सम्प्रदायों में धर्म की बातों को ही महत्त्व दिया जाता तो संसार स्वर्ग बन जाता और धर्म के नाम पर भिन्नता नहीं होती।

वास्तव में जो धर्म था, उससे कुछ हटकर, विचारों को लेकर एक सम्प्रदाय बना फिर उस सम्प्रदाय के स्थापित होने पर भी संतुष्टि नहीं हुई और महापुरूष ने फिर कुछ और उसमें कम किया या उससे हटकर जोड़ दिया तो फिर एक नया सम्प्रदाय बन गया। इस प्रकार धर्म के साथ अपने-अपने सुझावों व विचारों को जोड़कर, पूर्व के सम्प्रदाय की कुछ बातों का समर्थन या विरोध करके नए-नए सम्प्रदायों का जन्म होता रहा है और यह क्रम अभी भी जारी है।

अनेक मजहबों की स्थापना से यह तो सिद्ध है कि पूर्व के मजहब की सिद्धान्तों से सहमति होती तो दूसरे, तीसरे, चौथे सम्प्रदायों का जन्म नहीं होता। किन्तु सहमति न होने के कारण, वैचारिक भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का जन्म होता गया। यह भी सत्य है यदि सभी सम्प्रदायों के विचार एक होते, पूर्ण रूपेण धर्म के अनुसार होते तो, फिर न तो सम्प्रदायों का जन्म होता, न विवाद होते, न धर्मान्तरण जैसी कोई स्थिति बनती।

धर्म सूई का कार्य करता है, जो सबको संगठित करता है, धर्म शाश्वत है, सनातन (हमेशा से था हमेशा रहेगा) है, सर्वकालिक है, सबके लिए है, निष्पक्ष है, पूर्ण है, जीवन का आधार है। संसार के सभी मानवों का धर्म एक है। क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ में परमात्मा ने ही यह ज्ञान हमें दिया था। परमात्मा एक है इसलिए धर्म भी एक है सम्प्रदायों के जनक अनेक हैं इस कारण सम्प्रदाय भी अनेक है। परमात्मा एक होने से उसका ज्ञान धर्म भी एक है सम्प्रदाय के जनक अनेक होने से उनका ज्ञान भी अलग-अलग है। अलग-अलग विचारों को मानने में और फिर उनको आगे बढ़ाने के कारण ही समाज में टकराव व दूरियां बढ़ती हैं।

साम्प्रदायिक ज्ञान के मानने वालों की संख्या साम्प्रदायिकता की दृष्टि से कई भागों में विभाजित है, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध आदि, किन्तु धर्म को मानने वालों को बांटा नहीं जा सकता। जो धर्म को मानने वाले हैं, उन्हें एक ही धार्मिक नाम कहकर सम्बोधित किया जाता है। धर्म के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न धर्म को जाति, सम्प्रदाय, देश, काल, के नाम पर बांटकर पहचान दी जा सकती हैं, न धर्म परिवर्तनशील है, धर्म तो इन सबसे ऊपर है। जैसे समाज में ज्ञानी, दयालु, सेवक, धनवान् का पद जाति, सम्प्रदाय या भौगोलिक सीमाओं से बन्धा नहीं है। किसी भी जाति, सम्प्रदाय या देश का व्यक्ति उपरोक्त किसी भी सम्बोधन से पुकारा जा सकता है। ठीक इसी प्रकार धार्मिकता वही है जिसमें धर्म के लक्षण पाए जावें। धर्म के लक्षणों में धैर्यता, क्षमा, आत्मिक नियन्त्रण, चोरी न करना, पवित्रता (शारीरिक व आत्मिक) कर्मेन्द्रिय व ज्ञानेन्द्रिय नियन्त्रण, विद्या, सत्याचरण, क्रोध न करना ये लक्षण बताए हैं।

जब संसार में जातिवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता नहीं थी, सारे संसार के मानवों की एक जाति थी, तब विश्व प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य मनु ने यह विचार श्लोक के द्वारा ऐसे प्रकट किया था –

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी मजहब को मानने वाला, किसी भी देश का निवासी, किसी भी समय का व्यक्ति उपरोक्त बातों का खण्डन नहीं कर सकता। क्योंकि ये समस्त बातें मानवीय कल्याण के लिए मानव मात्र के लिए हैं, किसी व्यक्ति, विचारधारा या सम्प्रदाय का खण्डन नहीं करती। धर्म की परिभाषा को और सरल देखना है तो महाभारत रचयिता आचार्य व्यास की इन पंक्तियों को देखें जो धर्म के सार को कुछ शब्दों में ही व्यक्त कर देती हैं –

श्रुत्वा धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चावधार्यताम्। आत्मानः प्रतिकूलानी परेषां न समाचारेत्।।

अर्थात् – धर्म बताता है जो अपनी आत्मा को जो व्यवहार अच्छा नहीं लगता वैसे दूसरों से मत करो और जो व्यवहार अपने को अच्छा लगता है जैसा हम अपने साथ दूसरों के बर्ताव को चाहते हैं वैसा व्यवहार दूसरों से करो। इसका संसार में कोई विरोध नहीं कर सकता, यह सर्वमान्य है।

क्या सम्प्रदाय के मानने वाले इस बात को मान रहे हैं? नहीं मान रहे हैं इसीलिए विपरीत परिणाम सामने हैं। धर्म से सुख-शान्ति, संगठन बढ़ता है जो आज नष्ट होता जा रहा है। धर्म का स्थान सम्प्रदायों ने ले लिया। सम्प्रदाय अपनी संख्या बढ़ाने को अपना लक्ष्य मानकर संसार में अपने सम्प्रदाय का वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं और वे इसे ही अपना अज्ञानतावश धर्म मान रहे हैं। इसलिए लोभ, लालच, धोखा, षड़यन्त्र, भय, हिन्सा को आधार बनाकर अपनी संख्या वृद्धि अधर्म से भरे कार्यों को करके भी करने में लगे हैं। किन्तु धर्म समाज को श्रेष्ठता प्रदान करता है, मनुष्य को मनुष्य बनाता है, धोखा, हिंसा, असत्य, भय से दूर, प्रेम से रहने का तथा संगठन का सन्देश देता है।

धर्म से किसी को कोई हानि नहीं है, सर्वे भवन्तु सुखिनः का पवित्र ज्ञान धर्म देता है। दुर्भाग्य से धर्म जो आचरण का विषय है, उसे बाहरी चिह्नों तक हमने सीमित कर दिया। आचरण के स्थान पर ईंट, पत्थर की दीवारों से बने मन्दिर, पूजा पद्धति मस्जिद, गिरजाघर को, टोपी, दाढ़ी, तिलक, रंगों को धर्म समझ लिया। बाहरी दिखावे को ही धर्म मानने के कारण धर्म की आत्मा का बहिष्कार करके धर्म के नाम पर अपने गुटों को जो सम्प्रदाय हैं, उन्हें मान्यता दी जा रही है। यही विवाद का मूल है। काश संसार के सभी व्यक्ति धर्म के पक्के अनुयायी बनने का प्रयास करें तो यह धरती स्वर्ग हो सकती है। हिंसा, भेदभाव, ईश्वर व धर्म के नाम पर फैली नफरत का अन्त हो सकता है।

धर्म को समझकर अपनाने से ही लाभ है और केवल भावनात्मक दृष्टि से मानना विशेष लाभदायक नहीं है और इसी में कुछ ऐसी बातों को भी धर्म के नाम पर मान लिया जाता है जो वास्तव में धर्म के विपरीत होती है। आचार्य मनु ने इसीलिए कहा **''यस्त तर्केण अनुसंधन्ते, सः वेद नेतरः।''** अर्थात् धर्म को ज्ञान की कसौटी पर कसकर जांच परख के फिर अपनाना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने लिखा – **''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।''** दुर्भाग्य से धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार की कोई चर्चा या संवाद अथवा उसके संबंध में तर्क करना महान् अपराध माना जाता है और यह धर्म के ठेकेदारों ने समाज के दिमाग में बैठा रखा

– शेष पृष्ठ 8 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

मुसलमानों में इस आन्दोलन के विरुद्ध प्रचंड प्रतिक्रिया हुई। जमायत-उल-उलेमा ने मुम्बई में 18 मार्च, 1923 को मीटिंग कर स्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आन्दोलन की आलोचना कर निंदा प्रस्ताव पारित किया। स्वामी जी की जान को खतरा बताया गया मगर उन्होंने 'परमपिता ही मेरा रक्षक हैं, मुझे किसी अन्य रखवाले की जरुरत नहीं है' कहकर निर्भीक संन्यासी होने का प्रमाण दिया। कांग्रेस के श्री राजगोपालाचारी, मोतीलाल नेहरू एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू ने धर्मपरिवर्तन को व्यक्ति का मौलिक अधिकार मानते हुए तथा शुद्धि के औचित्य को स्वीकार करते हुए भी तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ में उसे असामयिक बताया। शुद्धि सभा गठित करने एवं हिन्दुओं को संगठित करने का स्वामी जी का ध्यान 1912 में उनके कलकत्ता प्रवास के समय आकर्षित हुआ था जब कर्नल यू. मुखर्जी ने 1911 की जनगणना के आधार पर यह सिद्ध किया की अगले 420 वर्षों में हिन्दुओं की अगर इसी प्रकार से जनसँख्या कम होती गई तो उनका अस्तित्व मिट जायेगा। इस समस्या से निपटने के लिए हिन्दुओं का संगठित होना आवश्यक था और संगठित होने के लिए स्वामी जी का मानना था कि हिन्दू समाज को अपनी दुर्बलताओं को दूर करना चाहिए। सामाजिक विषमता, जातिवाद, दलितों से घृणा, नारी उत्पीड़न आदि से जब तक हिन्दू समाज मुक्ति नहीं पा लेगा तब तक हिन्दू समाज संगठित नहीं हो सकता।

इसी बीच हिन्दू और मुसलमानों के मध्य खाई बराबर बढ़ती गई। 1920 के दशक में भारत में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए। केरल के मोपला, पंजाब के मुल्तान, कोहाट, अमृतसर, सहारनपुर आदि दंगों ने अंतर और बढ़ा दिया। इस समस्या पर विचार करने के लिए 1923 में दिल्ली में कांग्रेस ने एक बैठक का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता स्वामी जी को करनी पड़ी। मुसलमान नेताओं ने इस वैमनस्य का कारण स्वामी जी द्वारा चलाये गए शुद्धि और हिन्दू संगठन को बताया। स्वामी जी ने सांप्रदायिक समस्या का गंभीर और तथ्यात्मक विश्लेषण करते हुए दंगों का कारण मुसलमानों की संकीर्ण सांप्रदायिक सोच बताया। इसके पश्चात् भी स्वामी जी ने कहा की मैं आगरा से शुद्धि प्रचारकों को हटाने को तैयार हूँ अगर मुस्लिम उलेमा अपने तब्लीग के मौलवियों को हटा दें। परन्तु मुस्लिम उलेमा न माने।

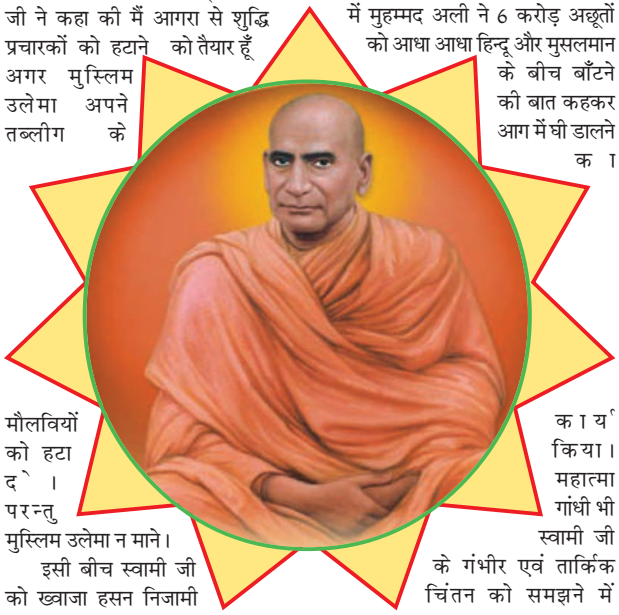

इसी बीच स्वामी जी को ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखी पुस्तक 'दाइए-इस्लाम' पढ़कर हैरानी हुई। इस पुस्तक को चोरी-छिपे केवल मुसलमानों में उपलब्ध करवाया गया था। स्वामी जी के एक शिष्य ने अफ्रीका से इसकी प्रति स्वामी जी को भेजी थी। इस पुस्तक में मुसलमानों को हर अच्छे-बुरे तरीके से हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की अपील निकाली गई थी। हिन्दुओं के घर-मुहल्लों में जाकर औरतों को चूड़ी बेचने से, वेश्याओं को ग्राहकों में, नाई द्वारा बाल काटते हुए इस्लाम का प्रचार करने एवं मुसलमान बनाने के लिए कहा गया था। विशेष रूप से 6 करोड़ दलितों को मुसलमान बनाने के लिए कहा गया था जिससे मुसलमान जनसँख्या में हिन्दुओं के बराबर हो जाये और उससे राजनैतिक अधिकारों की अधिक माँग की जा सके। स्वामी जी ने निजामी की पुस्तक का पहले 'हिन्दुओं सावधान, तुम्हारे धर्म दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया है' के नाम से अनुवाद प्रकाशित किया एवं इसका उत्तर 'अलार्म बेल अर्थात् खतरे की घंटी' के नाम से प्रकाशित किया। इस पुस्तक में स्वामी जी ने हिन्दुओं को छुआछूत का दमन करने और समान अधिकार देने को कहा जिससे मुसलमान लोग दलितों को लालच भरी निगाहों से न देखे। इस बीच कांग्रेस के काकीनाडा के अध्यक्षीय भाषण में मुहम्मद अली ने 6 करोड़ अछूतों को आधा आधा हिन्दू और मुसलमान के बीच बाँटने की बात कहकर आग में घी डालने का कार्य किया। महात्मा गांधी भी स्वामी जी के गंभीर एवं तार्किक चिंतन को समझने में असमर्थ रहे एवं उन्होंने यंग इंडिया के 29 मई, 1925 के अंक में 'हिन्दू मुस्लिम- तनाव - कारण और निवारण' शीर्षक से एक लेख में स्वामी जी पर अनुचित टिप्पणी कर डाली। उन्होंने लिखा 'स्वामी श्रद्धानन्द जी भी अब अविश्वास के पात्र बन गये हैं। मैं जानता हूँ की उनके भाषण प्राय: भड़काने वाले होते हैं। दुर्भाग्यवश वे यह मानते हैं कि प्रत्येक मुसलमान को आर्य धर्म में दीक्षित किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अधिकांश मुसलमान सोचते हैं कि किसी-न-किसी दिन हर गैर मुस्लिम इस्लाम को स्वीकार कर लेगा। श्रद्धानन्द जी निडर और बहादुर हैं। उन्होंने अकेले ही पवित्र गंगातट पर एक शानदार ब्रह्मचर्य आश्रम 'गुरुकुल' खड़ा कर दिया है। किन्तु वे जल्दबाज हैं और शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं। उन्हें आर्यसमाज से ही यह विरासत में मिली है।' स्वामी दयानन्द पर आरोप लगाते हुए गांधी जी लिखते हैं 'उन्होंने संसार के एक सर्वाधिक उदार और सहिष्णु धर्म को संकीर्ण बना दिया।'

गांधी जी के लेख पर स्वामी जी ने प्रतिक्रिया लिखी कि 'यदि आर्यसमाजी अपने प्रति सच्चे हैं तो महात्मा गांधी या किसी अन्य व्यक्ति के आरोप और आक्रमण भी आर्यसमाज की प्रवृतियों में बाधक नहीं बन सकते।'

स्वामी जी सधे कदमों से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। एक ओर मौलाना अब्दुल बारी द्वारा दिए गए बयान जिसमें इस्लाम को न मानने वालो को मारने की वकालत की गई थी के विरुद्ध महात्मा गांधी जी की प्रतिक्रिया पक्षपातपूर्ण थी। गांधी जी अब्दुल बारी को 'ईश्वर का सीधा-साधा बच्चा' और 'एक दोस्त' के

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वामी जी को ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखी पुस्तक 'दाइए-इस्लाम' पढ़कर हैरानी हुई।... इस पुस्तक में मुसलमानों को हर अच्छे-बुरे तरीके से हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की अपील निकाली गई थी। हिन्दुओं के घर-मुहल्लों में जाकर औरतों को चूड़ी बेचने से, वैश्याओं को ग्राहकों में, नाई द्वारा बाल काटते हुए इस्लाम का प्रचार करने एवं मुस्लमान बनाने के लिए कहा गया था।.....स्वामी जी ने निजामी की पुस्तक का पहले 'हिन्दुओं सावधान, तुम्हारे धर्म दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया है' के नाम से अनुवाद प्रकाशित किया एवं इसका उत्तर 'अलार्म बेल अर्थात खतरे की घंटी' के नाम से प्रकाशित किया। ....इस बीच कांग्रेस के काकीनाडा के अध्यक्षीय भाषण में मुहम्मद अली ने 6 करोड़ अछूतों को आधा आधा हिन्दू और मुसलमान के बीच बाँटने की बात कहकर आग में घी डालने का कार्य किया।

स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान्

भारत मां के तप:पूत स्वामी श्रद्धानन्द जी वीर महान्।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
वैदिक मर्यादा के पालक, धर्म नीति के शुभ संचालक।
देशभक्त बलवान् बनाए, नाथ आपने लाखों बालक।।
गुरुकुलकों की प्रथा डाली, किया अचम्भित सकल जहान।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
तुम जो कहते थे करते थे, दुखियों के संकट हरते थे।
पक्के ईश्वर विश्वासी थे, नहीं पापियों से डरते थे।
सुनकर नाम आपका, थर्राते थे लीडर बेईमान।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
ऋषिवर दयानन्द के चेले, देश भक्त हित संकट झेले।
अत्याचारी अंग्रेजों के, शोणित से थे होली खेले।।
स्वतन्त्रता का नाद बजाया, जगा दिया देश महान्।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
स्वामी तुम थे सच्चे नेता, अद्भुत त्यागी वीर विजेता।
परम तपस्वी, महा साहसी, नाम विश्व श्रद्धा से लेता।
मानवता के आप पुंज, की ऊंची भारत देश की शान।।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
जाति-पाति का रोग मिटाया, छुआ-छूत कलंक बताया।
मनुष्यमात्र की जाति एक है, जग को वैदिक पथ दर्शाया।
कर्म प्रधान जगत् में, तुमने दिए हजारों थे व्याख्यान।।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
शुद्धि की तलवार चलाई, मिटती हिन्दू कौम बचाई।
देख वीरता विकट तुम्हारी दुश्मन की सेना घबराई।
धर्म की रक्षा में है स्वामी, हंसकर हुए आप कुर्बान।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।
नेता अब यदि धर्म जान लें, और आपकी बात मान लें।
जिए देश हित मरे देश हित में, हृदय में यदि ठान ठान लें।।
ऋषियों के प्यारे भारत का, हो जाएगा फिर कल्याण।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय'
ग्राम+पो. बहीन, जिला-पलवल (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक
स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के 88वें बलिदान दिवस पर

भव्य शोभायात्रा एवं जनसभा

मंगलवार 23 दिसम्बर, 2014 : गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार

★यज्ञ ★ शोभायात्रा ★ सार्वजनिक सभा ★

आर्यजन इष्टमित्रों सहित पधारकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करें

निवेदक
महाशय धर्मपाल (अध्यक्ष (आर्य विद्या सभा))
डॉ. रामप्रकाश (कुलाधिपति)
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति)
आचार्य यशपाल (मुख्याधिष्ठाता)

पृष्ठ 2 का शेष

महान् धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-दूत .....

अधिवेशनों में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होना तो उन्होंने 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही आरम्भ कर दिया था। गाँधीजी के अफ्रीका में किए गए आन्दोलनों से उनकी सहानुभूति थी और 1914 में महात्माजी के भारत आने पर उनका सर्वप्रथम सार्वजनिक स्वागत और अभिनन्दन गुरुकुल कांगाड़ी में वहाँ के आचार्य महात्मा मुंशीराम ने ही किया था।

पं. गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, पं. मदनमोहन मालवीय तथा लाला लाजपत राय जैसे देशमान्य नेताओं से उनके आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध आजीवन रहे। जब महात्मा गाँधी जी ने 1920 में असहयोग का प्रवर्तन किया तो स्वामीजी ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने दिल्ली की असहयोगी जनता का नेतृत्व किया। हिन्दू-मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक स्वामीजी ने दिल्ली की जामा-मस्जिद की वेदी से मानव जाति की मूलभूत एकता का उपदेश दिया। इससे पूर्व जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर काँग्रेस में उन्होंने स्वागताध्यक्ष पद को स्वीकार कर देशवासियों को आश्वस्त किया कि भारतवासी दमन और अत्याचार के आगे झुकने वाले नहीं हैं। कालान्तर में काँग्रेस की मुस्लिम-तोषिणी नीति से असहमत होकर उन्होंने हिन्दू जाति के संगठन, दलितोद्धार तथा विधर्मियों को शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट कराने के आन्दोलन में गोली के शिकार होकर स्वामीजी ने अमर पद प्राप्त किया।

स्वामी श्रद्धानन्द रचित साहित्य

1916-17 की अवधि में स्वामीजी ने आर्यधर्म ग्रन्थमाला नामक एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। इसमें छपे सभी ग्रन्थ स्वयं स्वामीजी के द्वारा लिखे गए थे। इन ग्रन्थों में पादरी लेखक जे.एन फर्कुहर द्वारा आर्य समाज और दयानन्द पर लगाए गए आक्षेपों का उत्तर, पारसी मत और वैदिक धर्म की तुलना तथा मानव धर्म शास्त्र और शासन पद्धति आदि प्रमुख हैं। स्वामीजी 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्रों में वर्षों तक वेद, उपनिषद् तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के अंशों की व्याख्या के साथ प्रकाशित करते रहे थे। बाद में उनके ये धार्मिक प्रवचन 'धर्मोपदेश' शीर्षक से 'स्वाध्याय मंजरी' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए। स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द विषयक शोध कार्य किया। 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के तृतीयांश का उन्होंने उर्दू अनुवाद किया तथा पूना नगर में 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए 'उपदेश मंजरी' शीर्षक व्याख्यानों का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया। 'उपदेश मंजरी' के महत्त्व को उन्होंने विस्तार से रेखांकित किया था।

हिन्दी की भाँति उर्दू ग्रन्थ लिख कर स्वामी श्रद्धानन्द ने इस भाषा को समृद्ध किया। वर्ण-व्यवस्था, क्षात्रधर्म, यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या, अछूतोद्धार, नियोग प्रथा का औचित्य आदि उनके उर्दू ग्रन्थ 'कुलियात संन्यासी' शीर्षक से छपे थे। पौराणिक पण्डित गोपीनाथ द्वारा 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादक व प्रकाशक पर चलाए गए मानहानि के मुकदमों के विवरण को उन्होंने उर्दू में छपवाया तथा 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्तां' लिखकर आर्य समाज विषयक अपने अनुभवों को व्यक्त किया। हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी, अन्धा इत्तहाद, और खुफिया ज़िहाद, तथा मुहम्मदी साज़िश का इन्कशाफ आदि उनकी उर्दू कृतियाँ तत्कालीन साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले लोगों का पर्दाफाश करती हैं।

अंग्रेजी भाषा पर स्वामीजी का असाधारण अधिकार था। The future of the Arya samaj, Hindu Sanghatham, Saviour of the Dying Nation आदि उनकी अंग्रेजी की प्रमुख कृतियाँ हैं। Inside Congres उन राजनीतिक लेखों का संग्रह है जो उन्होंने काँग्रेस में रहकर की गई देश सेवा तथा तज्जन्य कड़वे-मीठे अनुभवों से सम्बन्धित हैं। The Arya samaj and its Detractors, A Vindication में पटियाला में आर्य समाजियों पर चलाए गए उस अभियोग का विस्तृत वर्णन है जो उस रियासत के राजा ने ब्रिटिश नौकरशाहों के कहने में आकर चलाया था। यह ग्रन्थ आचार्य रामदेव के सहलेखन में लिखा गया था। तत्कालीन गोरी सरकार के प्रति आर्य समाज की नीति को इस ग्रन्थ में सतर्क ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

- नन्दन वन, जोधपुर (राजस्थान)

अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द को शत् शत् नमन

हिन्दी, हिन्दू हिन्दुस्थान की रक्षा में पाया आनन्द।
अमर हो गये हँसते हँसते अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द।।

दयानन्द के प्यारे शिष्य बन प्रकट किया उनको आभार,
जब तक सूरज चाँद रहेगा भूल न पायेगा संसार।
नास्तिक से बनकरके आस्तिक मिटा गए जीवन के फंद।।
अमर हो गये हँसते हँसते .....

वैदिक धर्म से रिश्ता जोड़ा जाति पंथ का तोड़ा रोड़ा,
गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ला निज संस्कृति का छोड़ा घोड़ा।
शुद्धि चक्र चलाकर सारे शुद्ध किए मलकाने हिंद।।
अमर हो गये हँसते हँसते .....

बने राष्ट्र के सजग सिपाही दयानन्द के सच्चे राही,
हिंदू जाति के सुदृढ़ मसीहा राष्ट्रभक्त निर्भय उत्साही।
तन मन धन आहुत कर माँ को, अमिट छाप गए स्वर्णिम छंद।।
अमर हो गये हँसते हँसते .....

उनके पद चिह्नों पर चलकर श्रद्धा से श्रद्धांजलि दें,
भारत माँ की रक्षा के हित आओ हम मिलकर बलि दें।
शत् शत् नमन् हमारा तुमको झुकते हैं सर कोटि अनंत।।
अमर हो गये हँसते हँसते ....

- विमलेश बंसल 'आर्या'
329, द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65

सभा प्रधान श्री धर्मपाल जी का कार्यालय पधारने पर स्वागत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक अधिवेशन दिनांक 30 नवम्बर, 2014 में सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने के उपरान्त प्रथम बार सभा कार्यालय में पधारने पर नव निर्वाचित प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का सपत्नीक सभा में सेवारत कार्यकर्ताओं द्वारा माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। प्रधान जी ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित भी किया। इस अवसर पर सभा कार्यालय में पं. बालकिशन आर्य जी के ब्रह्मत्व में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। आचार्य ऋषिदेव जी के संक्षिप्त प्रवचन एवं पं. नन्दलाल निर्भय के भजन हुए। इस अवसर परआर्यसन्देश के सह व्यवस्थापक श्री एस. पी. सिह जी भी उपस्थित थे।

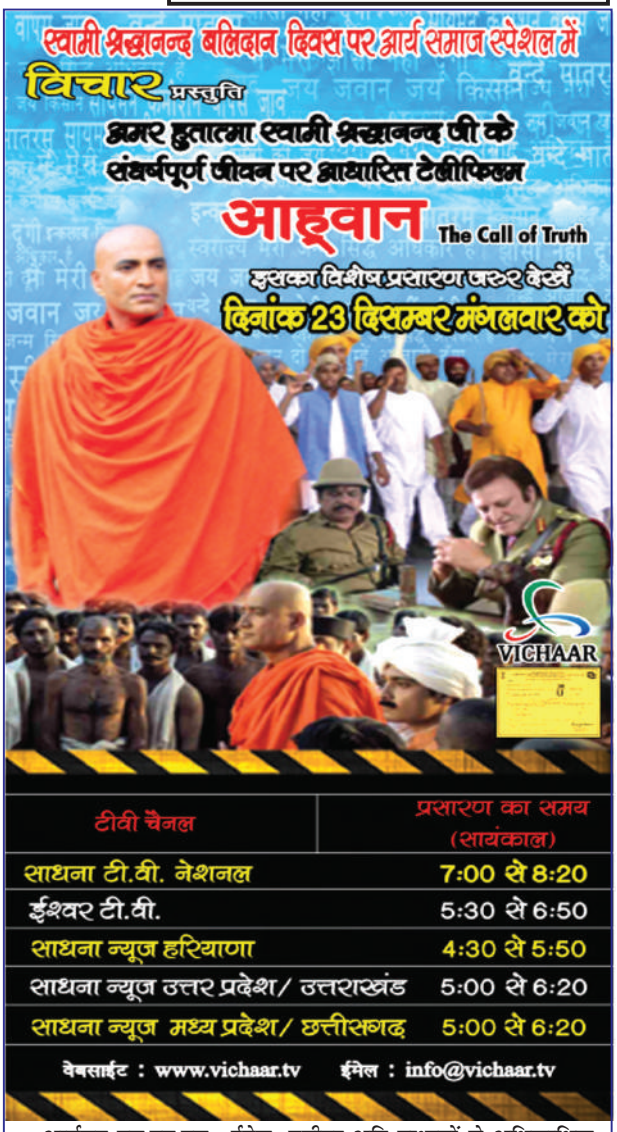

टीवी चैनल	प्रसारण का समय (सायंकाल)
साधना टी.वी. नेशनल	7:00 से 8:20
ईश्वर टी.वी.	5:30 से 6:50
साधना न्यूज हरियाणा	4:30 से 5:50
साधना न्यूज उत्तर प्रदेश/ उत्तराखंड	5:00 से 6:20
साधना न्यूज मध्य प्रदेश/ छत्तीसगढ़	5:00 से 6:20

वेबसाईट : www.vichaar.tv ईमेल : info@vichaar.tv

आर्यजन एस.एम.एस., ईमेल, ट्वीटर अदि माध्यमों से अधिकाधिक महानुभावों को कार्यक्रम प्रसारण की सूचना देकर अपने दोस्तों, रिश्तेदारों एवं परिचितों को देखने के लिए प्ररित करें - सम्पादक

कभी-कभी क्यों आवश्यक हो जाते हैं मुकदमें

आमतौर पर सामान्य धारणा है कि आर्य समाज में बहुत मुकदमें चलते हैं, सभाएं बहुत मुकदमे में लगी रहती हैं, सभाओं में मुकदमों के सिवाय क्या काम होता है? सभाओं ने आर्य समाज को मुकदमों में उलझा दिया है। ऐसी बातें लम्बे समय से मेरे कानों में पड़ती रही है, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जिस आर्य जनता के बीच में हम सब कार्य कर रहे हैं उनके सामने इन सब विषयों पर सही स्थितियाँ पहुंचनी चाहिए। क्योंकि यदि उपरोक्त बातें सही हैं तो उसके पीछे दोषी कौन है? और यदि उपरोक्त बातें गलत हैं तो सही स्थितियाँ हैं क्या? इसी हेतु से ये संक्षिप्त लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसमें कुछ मुकदमों का ही वर्णन हो सका है। उनका कारण और निदान लिखने का प्रयत्न किया गया है। ऐसे अनेक मुकदमें हैं जो समयनुसार आवश्यक हो जाते हैं और न्यायायिक प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। आपको ये फैसला करना है कि ये तथा ऐसे अनेक मुकदमे किये जाने चाहिए अथवा नहीं।

1. दिल्ली में हो रहे नकली आर्य समाजों के द्वारा विवाह।

मुकदमा संख्या 1. सुनील कुमार बनाम गवर्नमेन्ट ऑफ नेशनल कैपिटल दिल्ली। 2. दिल्ली हाई कोर्ट।

3. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थिति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस मुकदमे में अनिवार्य पक्ष बनने का प्रार्थना पत्र दिया था, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया है।

4. मुकदमें की वर्तमान अवस्था मुकदमा विचाराधीन है तथा कुछ महत्त्वपूर्ण आदेश भी पारित किए गये हैं। दिल्ली में अनेक लोगों ने अलग-अलग जगहों पर नकली आर्य समाजें बनाई हुई हैं तथा वहाँ शादियाँ कराकर पैसे कमाने का धन्धा चला रहे हैं। हमने अनेक बात सरकार से मिलकर इस पर रोक लगाने की कोशिश की पर विशेष सफलता नहीं मिल पाई थी।

यह मुकदमा सुनील कुमार नामक व्यक्ति ने दिल्ली में चल रहे नकली आर्य समाजों में से एक समाज में सम्पन्न हुए विवाह के सम्बन्ध में अपनी सुरक्षा की प्रार्थना को लेकर सरकार के विपक्ष में दायर किया था। कोर्ट ने सरकार से पुलिस के माध्यम से उन तथाकथित नकली आर्य समाज मन्दिरों की सच्चाई जानने के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा। इस रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया कि दिल्ली के केस में सम्मिलित कुल 5 नकली आर्य समाज मन्दिरों ने लगभग 3 सालों में 30000 (तीस हजार) विवाह सम्पन्न कराये, यह बहुत चौकाने वाला तथ्य था। सभा ने काफी लम्बे समय से नकली आर्य समाजों के खिलाफ सरकारी स्तर पर मुहीम चला रखी थी। सभा की जानकारी में जैसे यह मुकदमा आया तत्काल सभा ने इस सम्बन्ध में अपना पक्ष एवं अनुरोध न्यायालय के सामने रखने का निश्चय किया और सभा के अनुरोध पर कोर्ट ने सभा को पक्ष बनाना स्वीकार किया तथा सुनवाई के पश्चात् सभा के अनुरोध पर उन नकली 5 आर्य समाजों के विवाह कराने तथा प्रमाण पत्र जारी करने पर अस्थायी रूप से रोक लगा दी गयी जो कि अभी तक जारी है। मुकदमा अभी चल रहा है। सभा का प्रयास है कि नकली विवाह कराने पर पूरी तरह से रोक लगा दी जाय। ***विचारें क्या यह जरूरी था कि नहीं?***

2. दरियापुर केस - लगभग 80 वर्ष पूर्व दिल्ली के उत्तर में स्थित गांव दरियापुर में आर्य समाज के प्रचारकों ने कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिए एक भूमि दान में प्राप्त की थी। कन्या गुरुकुल दरियापुर लम्बे समय तक ठीक से चला किन्तु किन्ही कारणों से यह 1965-70 के आस-पास बन्द हो गया। 10-15 साल तक तो स्थितियाँ ठीक रहीं। उस के पश्चात् सभा के ध्यान न दे सकने के कारण से दानदाता परिवार के ही कुछ लोगों ने उस पर अपना अधिकार जमाना शुरु कर दिया। बाहर दुकानें बना लीं, अन्दर खेती आरम्भ करने की कोशिश की। गोबर आदि के टिब्बर बना दिये मजबूरी में सभा को केस करना पड़ा केस में आधा फैसला सभा के पक्ष में आया आधे के लिए अभी संघर्ष बाकी है और उसके लिए अलग केस डालकर उस स्थान को वापस लेने का प्रयास किया जा रहा है। मुकदमे अपने गति से चलते हैं सामने एक बड़ा परिवार है- किसी की मृत्यु होती है तो उनके बच्चों को पार्टी बनाना पड़ता है और केस लम्बा खिंचता जाता है। कई मुद्दों पर अपील भी करनी पड़ती है और लगातार कोर्ट में जाना पड़ता है। इसमें व्यय भी करना पड़ता है। ***बताइए मुकदमा न करें तो क्या करें, क्या छोड़ दें सभा की सम्पत्ति, आर्य समाज की सम्पत्ति को उन्हीं के हवाले। आप विचार करें।***

3. आर्यसमाज झिलमिल कॉलोनी - पूर्वी दिल्ली में आर्य समाज झिलमिल कॉलोनी काफी पुरानी समाज है उसका कार्य कुछ शिथिल हुआ। सभा की तरफ से ध्यान समय पर नहीं दिया जा सका और कुछ स्वार्थी तत्त्व सदस्य बन गए एवं उस पर अपना एकाधिकार जमाते हुए उसके भवन में दुकानें बनानी आरम्भ कर दीं और उनके सौदे भी कर दिए। और समाज के सब पुराने सदस्यों को हटाते हुए पुरोहित और सेवक को भी जबरन सभा से निकाल दिया गया। जब सभा को पता चला तो कार्यवाही करनी पड़ी अपने व्यक्ति को पुरोहित के रूप में रख दिया और हमारे पुरोहित को समाज से निकाल बाहर कर दिया। हम लोगों का भी समाज में जाना मुश्किल हो गया ऐसे समय में सभा अधिकारियों ने बड़ी मेहनत से कब्जा वापस लिया, दुकानें बननी बन्द कराई गईं और उससे अधिकार वापस लेने के लिए कई मुकदमें करने पड़े। अन्ततः फैसला सभा के पक्ष में आया तथा कोर्ट द्वारा सभा को आदेश हुआ कि वह समाज के नए चुनाव करवा देवें। इसकी विरोधियों ने अपील हाईकोर्ट दिल्ली में की। वहाँ से भी फैसला सभा के पक्ष में ही आया और आज आर्य समाज पूर्णरूप से सुरक्षित है और संचालित है। ***आप बताएं सभा को कोर्ट केस करना चाहिए था कि नहीं आप स्वयं विचारें।***

4. करोलबाग देवनगर प्रोपर्टी - सभा की एक सम्पत्ति है रामजीलाल भवन देवनगर। यह भवन रामजीलाल आर्य जी ने सभा को अपने कार्यों के लिए समर्पित किया था इसमें किराये की दुकानें है जो किराया सभा के काम आता है। सभा को सूचना मिली की एक स्थानीय राजनैतिक कार्यकर्त्ता ने उस पर एक फ्लोर पर जबरदस्ती कब्जा करने की प्लानिंग बनाली है और अपना ताला लगा दिया है। सभा के अधिकारी वहाँ तुरन्त पहुँचे और हवन करना प्रारम्भ कर दिया और उसके स्थान पर अपना ताला लगा लिया इतनी देर में वह राजनेता भी वहाँ पर पहुँच गया और गन्दी-गन्दी गाली देते हुए हवन में बाधा डालने लगा (आगे लिखना उचित नहीं है) और अपने स्थानीय गुंडों के साथ मारपीट आरम्भ कर दी। अन्ततः मुकदमा हुआ हमने उसके अधिकार से वापस लेने के लिए मुकदमा किया कई साल मुकदमा चला अन्ततः सभा की विजय हुई और पुलिस को आदेश दिया गया कि इस भवन का समस्त अधिकार सभा को सौप देवें। इस मारपीट के दौरान कई अधिकारी और कार्यकर्त्ताओं पर मुकदमें भी चले पर उन्होंने बड़े धैय से सहा। सभा उनके त्याग को हमेशा स्मरण करेगी। ***आप स्वयं विचार करें कि ऐसी स्थिति में सभा को क्या करना चाहिए था।***

मुकदमें प्रसन्नतापूर्वक नहीं किए जाते। मजबूरी और आवश्यकतावश किए जाते हैं और समय रहते न किए जाएं तो वह भविष्य के लिए बड़ी भूल होती है। गत दिनों अगर नकली बनी हुई प्रान्तीय सभाओं पर मुकदमें करके उन पर रोक न लगाई गई होती तो आज दिल्ली के आर्यसमाजों के संगठन का क्या हाल होता? ये हम कल्पना कर सकते हैं।

ये वर्तमान के दुःखद विषय हैं। यह सब हम केवल इसलिए अंकित कर रहे हैं कि इतिहास इन बातों को सनद रखे तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ी आर्यसमाज का संचालन करते समय इन गलतियों से - इन भूलों से सबक ले सके। इन बातों को अंकित करने का हमारा उद्देश्य यह भी है ताकि सभाओं की कार्यप्रणाली में कितनी मजबूरियां, कितने ऐसे मोड़ आते हैं कि जिनसे चाहकर भी व्यक्ति अपनी राह बदल नहीं सकता। संक्षेप में :-

- ये मुकदमें, एक मजबूरियां हैं, एक अच्छा भविष्य बनाने के लिए।
- ये मुकदमें एक मजबूरी है, गलत कार्यों को, गलत मंशाओं को होते रहने से रोकने के लिए।
- ये मुकदमें मजबूरियां हैं, सच और झूठ का फैसला करने के लिए ताकि सच अपाहिज न हो जाए।
- ये मुकदमें मजबूरियां हैं क्योंकि जब हल के अन्य सब रास्ते बन्द हो जाते हैं तब एकमात्र यही मार्ग शेष रहता है।
- प्रथम दृष्टया ये मुकदमें समाज के लिए घातक विष दिखते हैं परन्तु निर्णय आने के पश्चात् अमृत तुल्य दिखते हैं।

- सभा के त्रैवार्षिक विवरण -2011-14 से उद्धृत

पृष्ठ 2 का शेष

सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है परन्तु आपके जीवन के जो अनुभव हैं, अब उनकी अधिक आवश्यकता है।

जीवन क्या है इसका ज्ञान मुझे अब हो रहा है। हो सकता है इस मार्ग में मैं कभी अधीर हो दूसरी ओर चला जाऊँ। यदि ऐसा हुआ तो यह मेरे लिये कल्याणकारी नहीं होगा और आपकी यशकीर्ति को भी कलंक लग जायेगा इसलिये आप मेरा निरन्तर सन्मार्ग-दर्शन कराते रहें ऐसा मेरा विनम्र निवेदन है।

४. विपृचः स्थ वि मा पाप्मना पृङक्त—हे पितरजनो! यद्यपि आपका जीवन पवित्र और वर्णाश्रम धर्म के अनुकूल रहा है। आपने शिक्षा देते समय भी यही कहा है कि पुत्र! जो हमारे उत्तम आचरण हैं, उनका ही तुम ग्रहण करना। मानव होने से हममें भी कुछ न्यूनतायें होना सम्भव है परन्तु तुम हमारे गुणों का ही ग्रहण करना, अवगुणों का नहीं। परन्तु मैं बचपन से अब तक देख रहा हूँ कि आपका जीवन सफेद चद्दर के समान पवित्र है जिस पर किसी प्रकार का कोई धब्बा नहीं है। यह मेरे लिये गौरव की बात है जो मुझे सदैव आदर्श जीवन जीने को प्रेरित करती है। आपने मेरी कमियों को देख उन्हें दूर करने का प्रयास किया है। इसके लिये मुझे कभी-कभी कठोर वचन, शारीरिक प्रताड़न भी सहन करना पड़ा परन्तु जैसे स्वर्णकार सोने को अग्नि में तपा, उसका प्रताड़न, छेदन, भेदन कर सुन्दर आभूषण में बदल देता है वैसे ही आप अपने उन्हीं आदर्शों का पालन करते हुये मुझे सावधान करते रहिये। कहीं ऐसी अनहोनी न हो जाये कि आपका व्यवहार हमें नीचा दिखाये। यद्यपि मेरी यह धृष्टता ही है जो सूर्य की ओर मुख करके थूकता हूँ। परन्तु मेरी धृष्टता को क्षमा कर अपना शुभाशीर्वाद एवं कृपा-दृष्टि बनाये रखें ऐसा करबद्ध निवेदन है। - ***क्रमशः***

महिला डॉक्टर चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र में संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य चिकित्सालय औचन्दी, दिल्ली-110039 हेतु एक एम. बी.बी.एस. महिला डी.जी.ओ. की आवश्यकता है। उचित वेतन के साथ-साथ आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। सम्पर्क करें - **श्री महेन्द्र सिंह, मन्त्री मो. 09999148483**

आर्यसमाज ए ब्लाक प्रशान्त विहार

30वां वार्षिकोत्सव समारोह

15 से 21 दिसम्बर 2014

समापन समारोह : 21 दिसम्बर, 2014

प्रात: 7 से 1.30 बजे

ब्रह्मा – आचार्य अखिलेश्वर जी

भजन – श्री अंकित शास्त्री जी

अध्यक्ष : श्री संजय पंवार जी

मु.अतिथि : श्री प्रदीप शर्मा जी

वि. अतिथि : सर्व श्री ताराचन्द बंसल, जयभगवान अग्रवाल, प्रवेश वाही, विनय आर्य, धर्मपाल आर्य।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– सोहनलाल मुखी, मन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी, भोलाझाल मेरठ (उ.प्र.)का

वार्षिकोत्सव समारोह

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : 5 जनवरी से

वेद संगोष्ठी – 13 जनवरी, 2015

विषय: वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप

– स्वामी विवकानन्द सरस्वती, कुलपति

आर्यसमाज जवाहर नगर लुधियाना का

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 से 30 नवम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर पं. बालकिशन के ब्रह्मत्व में यज्ञ, पं. उपेन्द्र के भजन एवं डॉ. देव शर्मा वेदालंकार के प्रवचन हुए। समापन समारोह के अवसर पर आर्य कॉलेज लुधियाना में संस्कृत विषय में प्रथम स्थान पाने वाले छात्रों को श्रीमती सुमित्रा देवी जी द्वारा पारितोषिक एवं स्मृति चिह्न देकर पुरस्कृत किया गया।

– डॉ. विजय सरीन, प्रधान

गायत्री महायज्ञ, योग साधना एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

21 से 28 दिसम्बर 2014

ओमानन्द योगाश्रम देवधर्म, इन्दौर (म.प्र.)

द्वारा : स्वामी ओमानन्द सरस्वती

प्राकृतिक चिकित्सा : डॉ. रघुरंजन जैन

गायत्री महायज्ञ : आत्मदीक्षिता सरस्वती

प्रवचन : श्री प्रकाश आर्य, डॉ. संजय देव, भानुप्रताप वेदालंकार, आनन्द मुनि।

–दिनेश कुमार रणधर

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी का

47वां वार्षिकोत्सव एवं संगीतमय श्रीराम कथा

17 से 21 दिसम्बर 2014

समापन समारोह : 21 दिसम्बर, 2014

प्रात: 8 से 12.30 बजे

ब्रह्मा – आचार्य शशिकान्त शास्त्री

कथा : पं. कुलदीप आर्य

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– सुशील आर्य, मन्त्री

आर्ष गुरुकुल नोएडा का

वार्षिकोत्सव व यजुर्वेदीय यज्ञ

बलिदान सम्मेलन : 21 दिसम्बर

ब्रह्मा – आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

वेदकथा : डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)

भजन– पं. भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली)

मुख्य अतिथि –श्री राजनाथ सिंह जी (गृहमन्त्री, भारत सरकार)

समारोह अध्यक्ष : डॉ. अमिता चौहान जी

वक्ता : स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, साध्वी उत्तमा यति, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार एवं डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार।

– कै. अशोक गुलाटी, मन्त्री

पृष्ठ 4 का शेष

रूप में सम्बोधित करते हैं जबकि स्वामी जी द्वारा की गई इस्लामी कट्टरता की आलोचना उन्हें अखरती है। गांधी जी ने कभी भी मुसलमानों की कट्टरता की आलोचना नहीं की और न ही उनके दोषों को उजागर किया। इसके चलते कट्टरवादी सोच वाले मुसलमानों का मनोबल बढ़ता गया एवं सत्य एवं असत्य के बीच वे भेद करने में असफल हो गए। मुसलमानों में स्वामी जी के विरुद्ध तीव्र प्रचार का यह फल निकला कि एक मतान्ध व्यक्ति अब्दुल रशीद ने बीमार स्वामी श्रद्धानन्द को गोली मार दी जिससे उनका तत्काल देहान्त हो गया। स्वामी जी का उद्देश्य विशुद्ध धार्मिक था न कि राजनैतिक। हिन्दू समाज में समानता उनका लक्ष्य था। अछूतोद्धार, शिक्षा एवं नारी जाति में जागरण कर वह एक महान समाज की स्थापना करना चाहते थे। आज आर्यसमाज का यह कर्त्तव्य है कि उनके द्वारा छोड़े गए शुद्धि चक्र को पुन: चलाये। यह तभी संभव होगा जब हम मन से दृढ़ निश्चय करें कि आज हमें जातिवाद को मिटाना है और हिन्दू जाति को संगठित करना है।

शोक समाचार

श्री विश्वबन्धु आर्य नहीं रहे

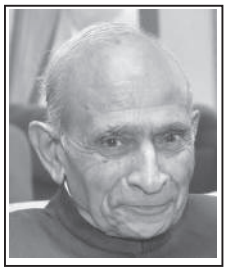

आर्य वीर दल के सक्रिय सदस्य और आर्यसमाज के नेता श्री ओम प्रकाश त्यागी एवं लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) जी के निकट सहयोगी श्री विश्वबन्धु आर्य जी का दिनांक 27 नवम्बर, 2014 को निधन हो गया। उनका अन्मि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। वे आर्य वीर दल की शाखाओं के मुख्य अनुदेशक रहे। उन्होंने आजादी से पहले 1946 में नोआखली, पूर्वी बंगाल में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के दौरान सद्भावना कायम करने तथा राहत कार्य करने के लिए आर्यसमाज की ओर से सक्रियता से भाग लिया। वर्ष 1966 के गौरक्षा आन्दोहन के दौरान उन्होंने आर्यमाज दीवान हॉल से आन्दोलन का सफल प्रबन्धन किया। वे आर्यसमाज दीवानहॉल के मन्त्री चुने गए और सेवानिवृत्ति के बद उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में अपनी सेवाएं प्रदान की। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, तीन सुपुत्रों एवं तीन सुपुत्रियों का भरापूरा पविार छोड़ गए हैं।

श्री अर्जुनदेव खन्ना को पत्नीशोक

आर्यसमाज के वृहद परिवार के सदस्य श्री अर्जुन देव खन्ना जी की धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी जी का दिनांक 8 दिसम्बर, 2014 को 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्रीमती विजय लक्ष्मी जी श्री सोमाश्रित (लोकनाथ जी) की सुपुत्री थीं। उनका पूरा परिवार महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित था। अपने परिवार से प्राप्त संस्कारों एवं विचारधारा को ही उन्होंने अपनी सन्तानों के हृदय में रोपित किया।

वे यज्ञ के प्रति अत्यन्त समर्पित थी। उनकी सत्संग मंडली घर-घर में वेदपाठ एवं सत्संग करती थी। वे अपने पीछे दो बेटों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा एवं शान्ति यज्ञ 12 दिसम्बर को बिश्नोई मन्दिर सिविल लाइन में हुई, जिसमें दिल्ली सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से श्री राजेन्द्र दुर्गा जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – हैल्प लाइन

समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें–

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग –	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा –	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता –	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु–	श्री अर्जुन देव चड्ढा (941418728)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य –	श्री अशोक कुमार (9540040322)

– महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

चण्डीगढ़ पुस्तक मेला

स्थान : परेड़ ग्राउंड, सैक्टर-17, चण्डीगढ़

19 दिसम्बर से 28 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

कटक पुस्तक मेला

स्थान : बलियात्रा ग्राउंड (किल्ला पड़िया)

बाराबंकी स्टेडियम के सामने, कटक (उड़ीसा)

18 से 26 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

निवेदक :-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 दिसम्बर से रविवार 21 दिसम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18/19 दिसम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 दिसम्बर, 2014

भारतीय भोजन क्यों नहीं करते आप ?

आजकल बहुत से लोग हैं .... जिन्हें 'पिज्जा' खाने में बड़ा मजा आता है। चलिये पिज्जा पर एक नजर डालें। पिज्जा बेचने वाली कंपनियाँ निम्न प्रकार हैं –

Pizza Hut, Dominos, KFC, McDonalds, Pizza Corner, Papa John's Pizza, California Pizza Kitchen, Sal's Pizza

ये सब कम्पनियाँ अमेरिका की हैं। आप चाहे तो Wikipedia पर देख सकते हैं।

Note:– पिज्जा मे टेस्ट लाने के लिये E-631 Flavor Enhancer नाम का तत्व मिलाया जाता है, जो सुअर के मांस से बनता है। आप चाहें तो Google पर देख लें। एक और बात, मित्रों अगर खाने पीने कि चीजों के पैकेटो पर निम्न कोड लिखे हैं तो उसमें ये चीजें मिली हुई है....

ई–322 गाय का मांस
ई–422 एल्कोहल तत्त्व
ई–442 एल्कोहल तत्व और केमिकल
ई–471 गाय का मांस और एल्कोहल
ई–476 एल्कोहल तत्त्व
ई–481 गाय व सुअर के मांस के संगठक
ई–627 घातक केमिकल
ई–472 गाय, सुअर, बकरी का मिक्स मांस के संगठक
ई–631 सुअर की चर्बी का तेल

ये सभी कोड आपको ज्यादातर विदेशी कम्पनी जैसे चिप्स, बिस्कुट, च्युंगम, टॉफी, कुरकुरे और मैगी आदि में दिखेंगे। ध्यान दे ये अफवाह नहीं हैं बिलकुल सच है अगर यकीन नही हो तो इंटरनेट गुगल पर सर्च कर लें। मैगी के पैक पर ingredient में देखें, flavor (E-635) लिखा मिलेगा। आप चाहें तो google पर इन सब नम्बर्स को देख सकते है –

E100, E110, E120, E140, E141, E153, E210, E213, E214, E216, E234, E280, E325, E326, E327, E334, E335, E336, E337, E422, E430, E431, E432, E433, E434, E435, E436, E440, E470, E471, E472, E473, E474, E475, E476, E477, E478, E481, E482, E483, E491, E492, E493, E494, E495, E542, E570, E572, E631, E635, E904.

– अयोध्या प्रसाद त्रिपाठी
77, खेड़ा खुर्द, दिल्ली–110082

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 3 का शेष

है। इसलिए धर्म का आचरण ज्ञानमय न होकर रूढ़ियों, परम्पराओं और भावनात्मक विचार धारा से बंधा हुआ है। इसलिए यह सारे विवाद का कारण बना हुआ है अन्यथा धर्म तो इतना पवित्र कर्म है जो मनुष्य की तो छोड़ो पशुओं को भी पीड़ा पहुंचाने में गलत कहता है।

धर्म के नाम पर फैली हुई अज्ञानता व विविधता को नष्ट करने के लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विक्रम संवत् 1931 में दिल्ली दरबार के समय यह प्रयास किया था कि सारे सम्प्रदाय के लोग एकत्रित होकर अपने–अपने सम्प्रदाय की अच्छाइयां कहें जिन मुद्दों पर एकता हो, उन्हें सब मानें और जिन पर विरोधाभास हो तो प्रमाणों के आधार पर उस पर विचार करके निर्णय किया जा सकता है। किन्तु लकीर के फकीर बनें कुछ सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने सत्य के स्थान पर जो परिपाटी चली आ रही है, उसे ही महत्त्व देने पर अड़े रहे, इस कारण से महर्षि का प्रयास सफल न हो सका।

विचारों की दृष्टि से अनेकता में एकता नहीं होती है विचारों की एकता में ही एकता होती है। इसलिए संसार के उस ज्ञान को जिसे सब मानें जो सबके हित में हो निष्पक्ष हो तथा पूर्ण हो ऐसे धर्म को मानना चाहिए और वह धर्म केवल परमात्मा का हो सकता है जो वेदों के माध्यम से सृष्टि के प्रारंभ में चार ऋषियों के माध्यम से परमात्मा ने प्रदान किया है।

आज सारा विवाद धर्म के लिए नहीं धर्म के नाम पर और तथाकथित विचारों के लिए हो रहा है। इसलिए धर्म के नाम पर अधर्म भी करने में कोई पाप नहीं समझते।

1901 में दिल्ली में एक सर्व सम्प्रदायों की बैठक हुई उसमें धर्म पर ही चर्चा की गई उस पर अनेक विद्वानों ने मतावलंबियों ने अपने अपने विचार रखे। सर्वानुमति से धर्म की एक परिभाषा बनाई वह है।

Dharma which hold and binds the member of community to gather.

धर्म वह जो सबको एक सूत्र में बांधकर संगठित करता है। किन्तु यह धर्म से संभव है, साम्प्रदायिकता से नहीं।

इसलिए सम्प्रदाय के स्थान पर धर्म को मान्यता देना चाहिए। इन पंक्तियों को कुछ इस तरह पढ़ें – **धर्म नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।** – ***मो. नं. 09826655117***

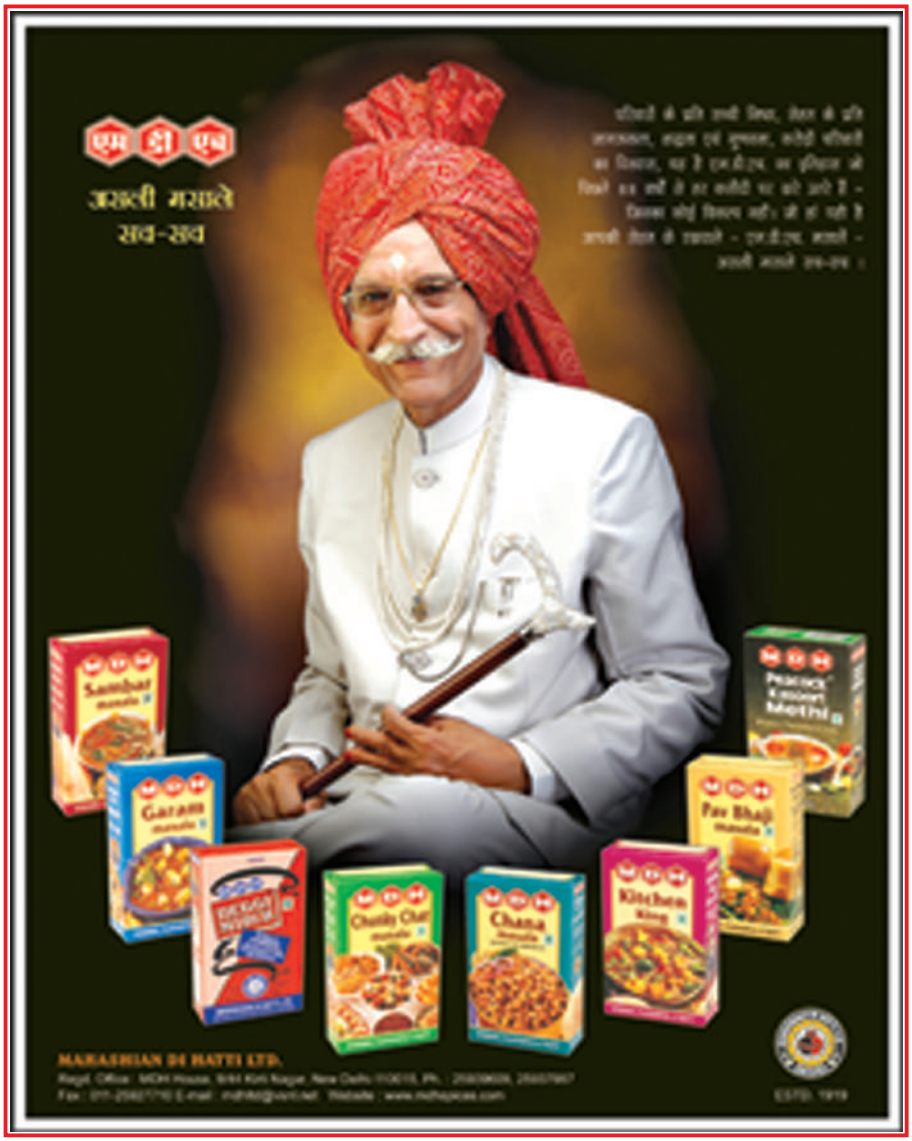

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह